भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 2 **अक्टूबर** 2001 **अंक** 10

स्मृति-शेष

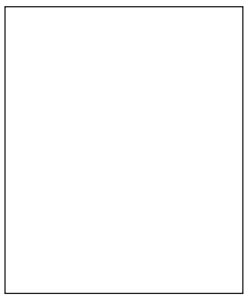

डॉ. परमेश्वरीलाल गुप्त

लोकजीवन में प्रमाणपुरुष बनने का सुचिन्तित साधन सत्संकल्प है। जिस किसी ने इस साधन का सहारा लिया उसका मनोरथ भंग नहीं हुआ। ऐसे ही एक व्यक्ति **डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त** थे जिनका 87 वर्ष की आयु में 29 जुलाई को मुम्बई में शरीरान्त हुआ। सूफी साहित्य के विद्वान, मुद्रातत्वविद्, पुरातत्वज्ञ, इतिहासकार और अन्वेषक डॉक्टर गुप्त का जन्म आजमगढ़ नगर में वैश्य परिवार में 24 दिसम्बर 1914 ई० में हुआ था। उन्होंने जीवन के बढ़ते हुए चरणों के साथ उसके बदलते हुए आयामों को बड़े समीप से देखा और अच्छी तरह पहचाना था। सभी रूपों में उनका जीवन उद्देश्यपूर्ण रहा है। स्कूल में पढ़ते समय महात्मा गाँधी के स्वतंत्रता-आन्दोलन से प्रेरित होकर उन्होंने आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। परिणामस्वरूप वे स्कूल से निकाल दिये गये। उनकी पढ़ाई का सिलसिला टूट गया। वर्षों तक वे शिक्षाप्राप्ति से वंचित रहे। उन्हें एक वर्ष तक जेल-यातना भी भोगनी पड़ी।

राष्ट्रीय आन्दोलन के सक्रिय कार्यकर्त्ता होते हुए पत्रकारिता की ओर उनका झुकाव हुआ। पहले वे वाराणसी के दैनिक 'आज' अखबार के आजमगढ़ के संवाददाता हुए और बाद में उसके सम्पादकीय विभाग के सदस्य। वे इक्कीस वर्षों तक (1930-51) 'आज' से जुड़े रहे। बाद में आगरा के दैनिक 'सैनिक' में रहे। इन दोनों पत्रों में उन्हें पं० बाबूराव विष्णु पराड़कर और कृष्णदत्त पालीवाल के सान्निध्य में लिखने-पढ़ने की प्रवृत्ति पुष्ट हुई। परिणामस्वरूप उन्होंने अध्ययन शुरू

शेष पृष्ठ 2 पर

राष्ट्र-निर्माण बनाम सत्ता-निर्माण

1947 में देश स्वतंत्र हुआ, पं० जवाहरलाल नेहरू प्रधानमंत्री हुए। नेहरू ने आजादी के बाद देश के लिए जो स्वप्न देखा था, उसे साकार करने का प्रयास किया। भाखड़ा नांगल ऐसे विशाल बाँध बनवाये, जिसे तीर्थ की संज्ञा थी। राष्ट्र निर्माण की दिशा में भिलाई, राउरकेला, दुर्गापुर ऐसे विशाल मूलाधार इस्पात उद्योग स्थापित कराये। इस प्रकार के कितने उद्योग स्थापित कराये जिससे देश स्वावलम्बी बने और विश्व में एक स्वतंत्र राष्ट्र के व्यक्तित्व का विकास हो। चीन के युद्ध ने नेहरू जी के विवेक को आहत किया और उनका निधन हो गया। लाल बहादुर शास्त्री जी जिन्होंने रेल-दुर्घटना में अपने उत्तरदायित्व का अनुभव करते हुए, रेलमंत्री पद से त्यागपत्र दिया। नेहरू जी के बाद शास्त्री जी प्रधानमंत्री बने। वे सरलता, सादगी और निष्ठा के प्रतीक थे।

उनके बाद इंदिरा गाँधी प्रधानमंत्री बनीं। यहीं से राष्ट्र निर्माण की दिशा सत्ता निर्माण की हो गई। उन्होंने सत्ता पर अपनी पकड़ बनाने के लिए आते ही बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया, प्रिवी बर्स बन्द कराये और लोकप्रियता प्राप्त करने के लिए कितनी अदूरदर्शी घोषणाएँ कीं। सत्ता की पकड़ ढीली पड़ती देखकर देश में आपात स्थिति (इमरजेन्सी) घोषित कर दी और देश के कितने राजनेता, जनसेवक, पत्रकार आदि को जेल में बन्द कर दिया। सत्ता में बने रहने के लिए अनेकश: प्रयास किये।

कांग्रेस में विभाजन हुआ, जनता पार्टी बनी और जनतादल की सरकार बनी। यह सरकार अधिक समय तक नहीं चल सकी और सत्ता निर्माण के लिए राष्ट्रीय कांग्रेस इंदिरा-कांग्रेस बन गई। इंदिराजी का एक छत्र राज्य देश में स्थापित हुआ। देश का पूर्णतया राजनीतिकरण हो गया। सार्वजनिक उद्योगों, सार्वजनिक संस्थानों, प्रशासनिक अधिकारियों सभी का राजनीतिकरण होने लगा और अवसरवादी सत्ता प्रेमी नेताओं ने उनका दोहन करना शुरू कर दिया, जिसमें प्रशासनिक अधिकारी भी सम्मिलित हो गये।

इस प्रकार देश में भ्रष्टाचार आसुरी शक्ति का उदय हुआ। सारे उद्योग, संस्थाएँ, यहाँ तक कि शिक्षण संस्थाएँ सभी का उपयोग राजनीतिक सत्ता की स्थिरता के लिए किया जाने लगा। देश के विश्वविद्यालय, शिक्षण संस्थाएँ, लोकहित के उपक्रम सभी में भ्रष्टाचार का दानव प्रवेश करने लगा। श्री नरसिंह राव ने अपनी सरकार बनाये रखने के लिए सांसदों को खरीदा। इस प्रकार देश की सत्ता राजनीति का घृणित स्वरूप ग्रहण कर विकसित हुई। श्री नरसिंह राव के बाद जितनी भी सरकारें आईं, इसी प्रकार भ्रष्टाचार से, आतंकवाद से समझौता करती रहीं ताकि सत्ता उनसे छूटने न पाये। मिली-जुली पार्टियों की सरकारें बनने लगीं और सत्ता न छूटे, इसके लिए सहयोगी मंत्रियों, सदस्यों और अधिकारियों के भ्रष्ट आचरण पर कान और आँखें तक बन्द कर ली गईं। इस प्रकार देश में आतंकवादी भ्रष्टाचार का साम्राज्य स्थापित हो गया।

सार्वजनिक उद्योग, संस्थाएँ सभी में राजनीति और भ्रष्टाचार का घुन ऐसा लगा कि ऊपर से साफ-सुथरे दीखने वाले उपक्रम भीतर से खोखले हो गये। आज स्थिति यह है कि सभी बड़े छोटे सार्वजनिक उपक्रमों का, जो जनता के अरबों-खरबों रुपयों को प्रतिवर्ष घाटे देकर चल रहे

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेष

किया और शिक्षा के सर्वोच्च शिखर डॉक्टरेट पर पहुँच गये। 1948 में उनके जीवन में नया मोड़ आया। आजमगढ़ के यशस्वी वकील रमाशंकर रावत ने उन्हें नयी दिशा में अनुप्रेरित किया। रावतजी ने हस्तलिखित पोथियों, मूर्त्तियों और सिक्कों का संग्रह कर रखा था। उस संग्रह से गुप्तजी में अन्वेषक की प्रवृत्ति उत्पन्न हुई और कालान्तर में वे पुरातत्वविद्, मुद्रातत्वज्ञ और इतिहासकार हो गये। एम०ए० करने के बाद वे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पुरातत्व संग्रहालय (भारत कला भवन) के उपाध्यक्ष बने। कुछ समय बाद मुम्बई के प्रिन्स ऑफ वेल्स म्युजियम के मुद्रातत्वविद् हो गये। वहाँ वे 1963 तक रहे। इसी कार्य से इसी बीच वे लन्दन भी गये और ब्रिटिश म्युजियम से लाभान्वित हुए। 1963-72 तक गुप्तजी पटना संग्रहालय के निदेशक रहे। कालान्तर में वे मुद्रातत्व-शास्त्र के विश्व के मान्य विद्वानों की श्रेणी में आ गये।

प्राचीन भारतीय इतिहास के लब्धकीर्त्ति विद्वान और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ० सदाशिव अनन्त अलतेकर ने गुप्तजी की प्रतिभा पहचानी और गुप्तजी का साथ उनके साथ हो गया। इससे उनके शोधकार्य में सिद्धि प्राप्त हो गयी। बाद में भारतीय पुरातत्त्व विभाग के निदेशक काशीनाथ नारायण दीक्षित के सहयोग से गुप्तजी ने प्राचीन सिक्कों के सम्बन्ध में जो शोधकार्य किया, उससे विदेशों में उनकी कीर्त्ति प्रसारित हो गयी। वे बार-बार विदेशों में व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित होते रहे।

पचास से अधिक शोधपरक ग्रन्थों के लेखक डॉक्टर परमेश्वरीलाल गुप्त ने अंजनेरी, नासिक में मुद्रातत्व-शास्त्र के अध्ययन के लिए सुप्रसिद्ध संस्थान प्रतिष्ठित किया जिसमें देश-विदेशों के विद्वान अध्ययन करते हैं। ऐसे बहु-आयामी व्यक्तित्व के धनी के निधन का समाचार उत्तर प्रदेश के किसी समाचारपत्र में नहीं छपा और उनकी मृत्यु के दो महीने बाद ही उनके शुभचिन्तकों, हितैषियों और विद्वानों को शोकजनक समाचार मिला। डॉक्टर गुप्त नहीं रहे, किन्तु उनका यश अमर है। कीर्त्तिः यस्य सः जीवति। **—पानासिं**

स्मृति-शेष

कामता प्रसाद का निधन

उत्तर भारत के अप्रतिम विद्वान, संस्कृत चूड़ामणि और अध्यात्म को समर्पित साहित्याचार्य **पं० कामता प्रसाद शास्त्री** का निधन हो गया। वे 86 वर्ष के थे। हिन्दी, संस्कृत, फारसी, अंग्रेजी एवं उर्दू पर समान अधिकार रखनेवाले पण्डितजी चलते-फिरते इन्साइक्लोपीडिया कहे जाते थे। पं० कामता प्रसाद ने वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय में भी अध्यापन किया।

पृष्ठ 1 का शेष

हैं या बन्द होकर भी सार्वजनिक कोष का अपहरण कर रहे हैं, विनिवेश किया जा रहा है।

शिक्षा के क्षेत्र में भी यही हो रहा है। देश की प्राचीन प्रतिष्ठाप्राप्त शिक्षा संस्थाएँ, विश्वविद्यालय, महाविद्यालय प्रभृति राजनीति के शिकार हो रहे हैं, सत्ताधारी अपने आदमी, को भले ही वह उस पद के योग्य न हो, बैठाने लगे हैं। इस कारण इन संस्थाओं में अनुशासनहीनता और भ्रष्टाचार बढ़ गया है। अध्यापक भी कारखानों के मजदूरों की तरह हड़ताल, अनशन, प्रदर्शन करने लगे हैं। परिणामस्वरूप शिक्षा निजी क्षेत्र की ओर अग्रसर हो रही है। कोचिंग संस्थाएँ इसी का परिणाम हैं।

आज राजनीति में कोई भला आदमी, बुद्धिजीवी आना नहीं चाहता। राजनीति पेशा बन गई है। राजनीतिज्ञ पेशेवर हो गये हैं जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी, वंश परम्परागत सत्ता में बने रहना चाहते हैं। राजनीति अकूत धन अर्जित करने, पद, प्रतिष्ठ प्राप्त करने और निजी स्वार्थ और हित में एक से एक अपराध करने का अधिकार प्राप्त करते हुए शासकीय सुरक्षा प्राप्त करने का साधन बन गई है। देशभक्ति, त्याग, सेवा, बलिदान ये शब्द शब्द कोशों में अर्थहीन बन चुके हैं।

'एक भारतीय आत्मा' पं० माखनलाल चतुर्वेदी ने राष्ट्रीय आन्दोलन में अपना और अपने परिवार का बलिदान किया, आजादी मिलने पर कोई पद स्वीकार नहीं किया। कहते थे—

बलिदानी पथ भुलाय क्यों शैतान की सखी।
तेरे हजार हाथ हैं कहते हैं पारखी।

—पुरुषोत्तमदास मोदी

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
द्वारा प्रकाशित

डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त की कृतियाँ

इतिहास

प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख (खण्ड-1 : मौर्य-काल से कुषाण (गुप्त-पूर्व) काल तक)	सजिल्द 150, अजिल्द	100
प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख (खण्ड-2 : गुप्त-काल 319-543 ई०)	सजिल्द	120
	अजिल्द	80
The Imperial Guptas, Vol. I-II	*Dr. P.L. Gupta* (Each)	150
गुप्त साम्राज्य	सजिल्द 350, अजिल्द	100
भारतीय वास्तुकला	सजिल्द 150, अजिल्द	100
भारत के पूर्व-कालिक सिक्के	सजिल्द	275
	अजिल्द	150
हमारे देश के सिक्के		15
प्राचीन भारतीय मुद्राएँ	सजिल्द 60, अजिल्द	40

संस्मरण

वे दिन वे लोग	60
बढ़ते कदम-बदलते आयाम	250

सूफी काव्य (सम्पादन)

मिरगावती (कुतुबन कृत)	150
कन्हावत (जायसी कृत)	80

शोधसम्बन्धी

यूरोप और अमेरिका में हिन्दी के हस्त लिखित ग्रन्थ	10
शोध और समीक्षा	60

भाषाई प्रदूषण

अपनी मातृभाषा का सम्मान जब हम नहीं करेंगे तब कौन करेगा? अंग्रेजी बोलनेवालों पहले अपने गिरेबां में झाँकों। आधा अंग्रेजी, आधा हिन्दी बोलकर विद्वान बनने का ढोंग न रचो। सम्मान पाना चाहते हो तो पहले अपनी मातृभाषा का सम्मान करना सीखो। सम्मान पाने के लिए पहले खुद नजीर बनो। भाषाई प्रदूषण ने हमारे संस्कार को बदल डाला है, बोलने से पहले सोचना उचित नहीं समझते हम। अपने कर्म से असाधारण बनो तभी सम्मान मिलेगा।

शिव के अलौकिक त्रिशूल पर बसी काशी के लोगों द्वारा ऐसे शब्दों का प्रयोग समझ से परे है। हम खुद को बुद्धिमान और बड़ा प्रदर्शित करने के लिए अधिक से अधिक अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग करते हैं। ऐसे लोग खुद को चाहे कितना भी बुद्धिमान समझें, लेकिन मैं उन्हें दयनीय मानता हूँ।

हिन्दी हमारी मातृभाषा है। इसका अर्थ यह तो नहीं कि हम जैसी चाहें वैसी हिन्दी बोलें, लिखें। आज अधकचरी अंग्रेजी, अंग्रेजीमिश्रित हिन्दी बोलकर लोग अपना बड़प्पन साबित करते हैं। हम बचपन से अपने बच्चों को जितना अधिक अंग्रेजी पढ़ाने पर ध्यान देते हैं यदि उसका एक अंश भी बच्चों को शुद्ध हिन्दी सीखने पर ध्यान दें तो भाषाई प्रदूषण पर काफी हद तक रोक लगायी जा सकती है।

हिन्दी में अच्छे शब्दों का अथाह भण्डार है, लेकिन हम सीखना नहीं चाहते। बचपन से ही अंग्रेजी स्कूल में पढ़ने के बावजूद हम अशुद्ध बोलते हैं। न तो हिन्दी सही बोल पाते हैं और न ही अंग्रेजी।

—विष्णुकान्त शास्त्री

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के साहित्यिक पुरस्कार (वर्ष 1999-2000)

भारत भारती सम्मान : दो लाख इक्यावन हजार रुपये
डॉ०लक्ष्मीशंकर 'निशंक'

दो लाखा पुरस्कार

महात्मा गाँधी सम्मान : श्री धर्मपाल
हिन्दी गौरव सम्मान : पं० सीताराम चतुर्वेदी
पण्डित दीनदयाल उपाध्याय सम्मान
श्री दत्तोपन्त ठेंगडी
अवन्ती बाई सम्मान : श्री वचनेश त्रिपाठी
लोहिया साहित्य सम्मान : श्री कुँवर नारायण

पचास हजारा पुरस्कार

साहित्य भूषण सम्मान

1. डॉ० शिवबालक शुक्ल, 2. रामफेर त्रिपाठी, 3. श्री मृदुला गर्ग, 4. डॉ० लक्ष्मण दत्त गौतम, 5. डॉ० नरेन्द्र मोहन, 6. डॉ० आनन्द प्रकाश दीक्षित, 7. डॉ० कैलाश चन्द्र भाटिया, 8. पं० कृष्णबिहारी मिश्र, 9. डॉ० कन्हैया सिंह, 10. डॉ० भोलाशंकर व्यास

पचास हजार के अन्य सम्मान-पुरस्कार

विद्याभूषण : डॉ० रमाशंकर तिवारी
लोकभूषण : डॉ० योगेन्द्रनाथ बाली
पत्रकारिता भूषण : अच्युतानंद मिश्र
विज्ञान भूषण : डॉ० जयन्त विष्णु नारलिकर
प्रवासी भारतीय हिन्दी भूषण :
श्याम मनोहर पाण्डेय

पच्चीस हजारा पुरस्कार

बाल साहित्य भारती सम्मान

श्री विनोद चन्द पाण्डेय, डॉ० हरिकृष्ण देवसरे, डॉ० शकुन्तला सिरोठिया

ये पुरस्कार कब दिये जायँगे ?

राजनीति से अवकाश मिलने पर, सम्मान समारोह आयोजन हेतु धनराशि की व्यवस्था होने पर। सम्मानित साहित्यकार कृपापूर्वक प्रतीक्षा करें। चुनाव वर्ष की व्यस्तता में धैर्य न खोयें।

शब्दों (घोषणा) का आनन्द लीजिए, अर्थ की अपेक्षा मत कीजिए। राजनीति के इस युग में आज शब्द अर्थहीन हो गये हैं।

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के साहित्यिक पुरस्कार (वर्ष 2000-2001)

हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश ने 29 सितम्बर 2001 को संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष श्री केशरीनाथ त्रिपाठी की अध्यक्षता में वर्ष 2000-2001 के पुरस्कारों की घोषणा की।

भारत भारती सम्मान

वरिष्ठ साहित्यकार **श्री जानकीबल्लभ शास्त्री** (बिहार) को इक्यावन हजार रुपये का भारत-भारती सम्मान प्रदान किया जायगा।

दो लाखा पुरस्कार

पं० दीनदयाल उपाध्याय सम्मान

दो लाख रुपये का पं० दीनदयाल उपाध्याय सम्मान संस्थान के पूर्व कार्यकारी उपाध्यक्ष **डॉ० शरण बिहारी गोस्वामी** को प्रदान किया जायगा। यह उल्लेखनीय है कि गोस्वामी जी को यह पुरस्कार मिलना निश्चय होने पर उन्होंने पुरस्कार समिति की सदस्यता से त्याग-पत्र दे दिया।

लोहिया साहित्य सम्मान : श्री मनु शर्मा
अवन्तीबाई लोधी सम्मान : श्री बृजेन्द्र अवस्थी
महात्मा गाँधी स्मृति सम्मान : श्री गिरिराज किशोर
हिन्दी गौरव सम्मान : श्री रामेश्वरदयाल दूबे

पचास हजारा पुरस्कार

साहित्य भूषण सम्मान

1. डॉ० विश्वनाथ तिवारी, 2. श्रीमती चित्रा मुद्गल, 3. प्रेमशंकर मिश्र, 4. डॉ० शिवशंकर त्रिपाठी, 5. डॉ० दुर्गाशंकर मिश्र, 6. डॉ० योगेश आलोक, 7. सुदेश भारती, 8. डॉ० सुरेश गौतम, 9. सत्यनारायण द्विवेदी 'श्रीश', 10. डॉ० विष्णुदत्त शर्मा 'राकेश', 11. डॉ० शिवबहादुर सिंह भदौरिया।

पचास हजार के अन्य सम्मान-पुरस्कार

विद्याभूषण : डॉ० बदरीनाथ कपूर
लोकभूषण : रामगोपाल शर्मा
कलाभूषण : डॉ० रमेश गौतम
पत्रकारिता भूषण : डॉ० भगवानदास अरोड़ा
विज्ञान भूषण : डॉ० देवेन्द्र शर्मा
प्रवासी भारतीय हिन्दी भूषण :
डॉ० इन्दुप्रकाश पाण्डेय

पचीस हजार के सम्मान-पुरस्कार

हिन्दी विदेश प्रसार : डॉ० महेन्द्र वर्मा
: सुश्री प्रतीक्षा शाह
बाल साहित्य भारती : डॉ० रोहिताश्व अस्थाना

पन्द्रह हजारा पुरस्कार

सौहार्द सम्मान

शंकर पुणतांबेकर (मराठी), **डॉ० जा० आशीर्वादम** (तमिल), **महाराज कृष्ण भरत** (कश्मीरी), **डॉ० रामप्रकाश** (पंजाबी), **दीन मोहम्मद 'दीन'** (उर्दू), **सुश्री निखत बेगम** (उर्दू), **डॉ० दयाल आशा** (सिंधी), **डॉ० बलवंत शांतिलाल जानी** (गुजराती), **डॉ० एम० वेंकटेश्वर** (तेलुगु), **मंजु शर्मा महापात्र** (उड़िया) का चयन किया गया है। वर्ष 1998 में प्रकाशित पुस्तकों के लिए 23 नामित पुरस्कारों के विजेताओं की घोषणा भी की गई है।

काशी की युवा साहित्यकार **डॉ० नीरजा माधव** को 'यशपाल पुरस्कार' उनके कहानी संग्रह 'अभी ठहरो अंधी सदी' पर बीस हजार रुपये की धनराशि व प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जायगा। उनकी प्रथम कृति 'चिटके आकाश का सूरज' भी संस्थान द्वारा पुरस्कृत हो चुकी है। डॉ० नीरजा, दूरदर्शन वाराणसी में कार्यक्रम अधिशासी पद पर कार्यरत हैं।

साहित्य की विविध विधाओं में 26 अनुशंसा पुरस्कार भी दिए जाएँगे।

हम अलख के स्वर अकिंचन

(काव्य)

अनिल मिश्र

100.00

युवा कवि की भाव-प्रवण कविताएँ। गाँव से शहर की यात्रायें, विभिन्न दृश्यों तथा अनुभवों से संयुक्त संवेदना सम्पन्न कविताएँ।

उत्तर प्रदेश और बिहार में हिन्दी

उत्तर प्रदेश और बिहार, बावजूद इनमें से दो नए राज्य बन जाने के, हिन्दी के लिए कितने उदार हैं, इसका प्रमाण इसी से मिलेगा कि दोनों जगह साल-साल भर से लगभग पुरस्कार घोषित हैं और पुरस्कार का समारोह नहीं हो पा रहा है। इसलिए नहीं कि पुरस्कार का पैसा नहीं है, इसलिए कि पुरस्कार के लिए समारोह का पैसा नहीं है। कहीं अधिक अच्छा होता कि ये सरकारें साहस दिखाती और घोषित कर देती कि हमारे खजाने में हिन्दी के लिए पैसा नहीं है। उर्दू के लिए है, क्योंकि उर्दू के साथ कुछ और किस्म का भय जुड़ा हुआ है। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान में कोई कार्यवाहक उपाध्यक्ष तक नहीं है। निदेशक भी बहुत समय तक कार्यवाहक रहे हैं। वित्ताधिकारी ही निदेशक रहा है। अब सुना है, कोई निदेशक कार्य कर रहा है, लेकिन करेगा क्या! हिन्दी संस्थान ऐसी स्थिति में पहुँच गया है कि डाकिया भी उसका पता भूल गया है। ऐसा समय आ सकता है कि गुप्तचर संस्था को वह संस्था है कि नहीं, इसकी खोज के लिए कहना पड़े। बिहार की हालत के बारे में आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री बता रहे थे कि हमारे लिए सर्वोच्च सम्मान घोषित तो कर दिया गया है। मैंने अपने राधा काव्य को उसी से समग्र रूप में छपाने का संकल्प ले लिया था, पर वह पुरस्कार पत्रावलियों में कहीं गुम हो गया है। बिहार की वह संस्था अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रही है। उसका आचार्य शिवपूजन सहाय ने पालन-पोषण किया था। बहुत महत्त्वपूर्ण पुस्तकें छपी थीं। अब वहाँ न पुस्तकें हैं, न प्रकाशन है। **—विद्यानिवास मिश्र**

पिछले कुछ वर्षों से टेलीविजन चैनलों के कार्यक्रमों में काल्पनिक और परियों की कथाओं पर आधारित धारावाहिकों की भरमार हो गयी है और उसका सीधा प्रभाव यह पड़ा है कि आम लोगों में काल्पनिक और परियों की कथाओं पर आधारित पुस्तकों के प्रति लगाव में भारी कमी आयी है।

इसके विपरीत गम्भीर विषयों, धार्मिक, तकनीकी और स्वास्थ्यसम्बन्धी पुस्तकों को पढ़ने वालों की संख्या में पिछले दो सालों में भारी वृद्धि हुई है और इस प्रकार की पुस्तकों को पढ़नेवालों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है।

आज सबसे अधिक इस बात की आवश्यकता है कि अभिभावकों को चाहिए कि वे इस बात को देखें कि टेलीविजन के कार्यक्रमों का उनके बच्चों पर किस प्रकार का कितना प्रभाव पड़ रहा है। अभिभावकों को अपने बच्चों में विभिन्न विषयों की पुस्तकों को पढ़ने की रुचि जगानी चाहिए ताकि बच्चों के वास्तविक ज्ञान में तेजी से विकास हो।

—दीनानाथ मल्होत्रा
अध्यक्ष, फेडरेशन ऑफ इण्डियन पब्लिशर्स

★★★

हमारी भाषा ही हमारा प्रतिबिम्ब है और इसलिए यदि आप मुझसे कह दें कि हमारी भाषाओं में उत्तम विचार अभिव्यक्त किये ही नहीं जा सकते तब तो हमारा संसार से उठ जाना ही अच्छा है। क्या कोई व्यक्ति स्वप्न में भी यह सोच सकता है कि अंग्रेजी भविष्य में किसी भी दिन भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है?

यदि हमें पिछले पचास वर्षों में देशी भाषाओं द्वारा शिक्षा दी गयी होती तो आज हम किस स्थिति में होते। हमारे पास आजाद भारत होता, हमारे पास अपने शिक्षित आदमी होते जो अपनी भूमि में विदेशी जैसे न रहे होते, बल्कि जिनका बोलना जनता के हृदय पर प्रभाव डालता। **—महात्मा गाँधी**
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

★★★

राजस्थानी भाषा को संविधान की आठवीं सूची में सम्मान के साथ सम्मिलित किया जाना ही चाहिए और उसके लिए राजस्थान विधानसभा को प्रस्ताव पारित करना चाहिए जिससे उसे संसद की स्वीकृति मिल सके। जो समाज और देश साहित्य व साहित्यकारों का सम्मान करते हैं वे ही आपकी विरासत को आगे बढ़ाते हैं। जो समाज साहित्य, संगीत, कला व संस्कृति से हीन होता है उसकी पहचान लुप्त हो जाती है। वस्तुत: साहित्य, संस्कृति की अजस्र भावधारा का निरन्तर प्रवाह है जो हर व्यक्ति, समाज व देश का मार्गदर्शन करता है, प्रेरणा देता है। जीवन की सार्थकता है सत् चित्त व आनन्द की अनुभूति, साहित्य उसकी अभिव्यक्ति है।

—डॉ० लक्ष्मीमल सिंघवी
कृष्णकुमार बिड़ला
अध्यक्ष, के०के० बिड़ला फाउंडेशन

खुशवंत सिंह की पुस्तक के प्रकाशन पर रोक हटी

प्रसिद्ध लेखक खुशवंत सिंह की आत्मकथा 'टुथ, लव ऐंड लिटिल मेलिस' के प्रकाशन पर लगे प्रतिबन्ध को दिल्ली उच्च न्यायालय ने हटा दिया है। अदालत ने इस सम्बन्ध में याचिका दायर करने वाली केन्द्रीय मंत्री मेनका गाँधी पर 10 हजार रुपये का जुर्माना भी किया।

अदालत ने कहा कि आत्मकथा में उन लोगों की खास चर्चा की जाती है, जिनसे लेखक के व्यक्तिगत सम्बन्ध होते हैं। लेखक पर पाबंदी नहीं लगाई जा सकती कि उसे क्या लिखना चाहिए और क्या नहीं? यदि संविधान द्वारा देश के नागरिकों को दिए गए भाषण तथा अभिव्यक्ति के अधिकार का उल्लंघन किया गया तो समाज के लिए यह काफी ज्यादा खतरनाक होगा। लेखक द्वारा की गई टिप्पणियों को जनहित के खिलाफ नहीं माना जा सकता है।

सार्वजनिक जीवन में रहने वाले लोगों के सार्वजनिक तथा निजी जीवन के बीच अन्तर करना मुश्किल होता है और सार्वजनिक जीवन में रहने वालों के लिए यह वास्तव में एक समस्या है। लेखक इस बात के लिए होने वाले परिणामों को भुगतने को तैयार है तो ऐसी स्थिति में पुस्तक पर प्रतिबन्ध लगाए रखने का कोई औचित्य नहीं है।

परिचर्चा गोष्ठी

प्रताप सहगल के उपन्यास 'अनहद नाद' पर साक्षी साहित्य कला मंच द्वारा चंडीगढ़ में परिचर्चा आयोजित हुई जिसमें साहित्य, परम्परा दर्शन एवं संस्कृति के सन्दर्भ में विस्तृत चर्चा हुई।

'अनहद नाद' भारत पाक विभाजन की पृष्ठभूमि में एक संघर्षशील चरित्र की कहानी है। इस परिचर्चा की शुरुआत श्री राजेन्द्र टोनी ने की। इसमें भाग लेने वालों में प्रमुख थे—शिवानी चोपड़ा, डॉ० नरेन्द्र मोहन, मल्लिक राजकुमार, डॉ० चन्द्रत्रिखा (अध्यक्ष, हरियाणा साहित्य अकादमी), डॉ० सादिक, डॉ० यश गुलाटी, डॉ० संसारचन्द्र, डॉ० पुष्पपाल सिंह, प्रेकी गोर्की, डॉ० इंदु बाली, प्रेम विज, मधुर कपिला, अरुण आदित्य, वैभव सिंह, कमलेश शर्मा, जसवीर चावला आदि।

नये प्रकाशन

रंग बेरंग (गजल संग्रह)
जीवन महता
मर्मस्पर्शी गजलों का संग्रह
मूल्य : 100.00

कबिरा
जीवन महता
कबीर के दोहों की शैली में कबीर के विचारों को बोधगम्य बनाने का सफल प्रयास
मूल्य : 100.00

प्रकाशक : **यतीन्द्र साहित्य सदन,** भीलवाड़ा (राज.)

हिन्दी दिवस (14 सितम्बर)

हम स्वाधीनता के 54 वर्ष बाद भी औपनिवेशिक भाषा के वर्चस्व को खत्म कर पाने में असमर्थ हैं। आज हिन्दी की जो स्थिति है उसके लिए व्यवस्था दोषी है। जिस वर्ग का प्रभुत्व है, जो समुदाय हमारी नियति तय करता है, वह औपनिवेशिक मानसिकता से नहीं उबर पाया है।

—निर्मल वर्मा

❑ ❑ ❑

हिन्दी तभी समृद्ध होगी, जब क्षेत्रीय भाषाओं के शब्दों को हिन्दी में आने की इजाजत दी जाएगी।

—पद्मा सचदेव

❑ ❑ ❑

मैं आज इतना निराशावादी हो गया हूँ कि लगने लगा है कि अगले 25 वर्षों में कोई भी पढ़ा-लिखा व्यक्ति हिन्दी का इस्तेमाल नहीं करेगा। हिन्दी के मध्य वर्ग की भी हिन्दी में कोई रुचि नहीं है। जिसका आर्थिक स्थिति तनिक बेहतर होती है, वह हिन्दी से बचता है। **—पंकज बिष्ट**

❑ ❑ ❑

हिन्दी पत्रकारों से अब अंग्रेजी के पत्रकार भी सावधान हैं। इनकी तैयारी व प्रस्तुति के सामने वे नतमस्तक होते हैं। हिन्दी अब रोजगार देने वाली भाषा है, तो निश्चित ही इसका भविष्य उज्ज्वल है।

—चित्रा मुद्गल

❑ ❑ ❑

हर भाषा अपने पुराने स्वरूप को खो रही है। दूसरी भाषाओं के शब्दों का उसमें घालमेल हो रहा है। यह संक्रमण का समय है। आने वाले दिनों में हिन्दी एक नए कलेवर में होगी। वह अकादमिक हिन्दी नहीं होगी। वह नई पीढ़ी की हिन्दी होगी।

—उदय प्रकाश

संस्कृत हमारी जीवित भाषा है। इसका विपुल साहित्य हमारी संस्कृति के लिए गौरव का विषय है। संस्कृत को केवल अध्यात्म-दर्शन से जोड़ना भूल है क्योंकि हमारा विपुल वैज्ञानिक साहित्य संस्कृत भाषा में ही उपलब्ध है। स्वामी विवेकानंद ने अपने व्याख्यान में कहा था—'....मेरा विचार है कि पहले हमारे शास्त्र-ग्रंथों में भरे पड़े आध्यात्मिकता के रत्नों को बाहर लाना है। ....इस मार्ग की बहुत बड़ी कठिनाई हमारी गौरवशाली भाषा संस्कृत ही है, यह कठिनाई तब तक दूर नहीं हो सकती, जब तक हमारी जाति के सभी मनुष्य संस्कृत के अच्छे विद्वान न हो जाएँ। ....क्योंकि संस्कृत के शब्दों की ध्वनि मात्र से ही एक प्रकार का गौरव, शक्ति और बल प्राप्त होता है।' इस प्रकार संस्कृत के अध्ययन और अध्यापन को प्रोत्साहन देने से नई पीढ़ी के ज्ञान का विस्तार तो होगा ही, साथ ही अनेक लोग संस्कृत में उपलब्ध साहित्य पर अनुसंधान और अन्वेषण के लिए प्रेरित होंगे।

—डॉ० मुरलीमनोहर जोशी

पुस्तक समीक्षा

सागरी पताका

राधामोहन उपाध्याय

250.00

सागरी पताका
ध्यानाकर्षक विश्व उपन्यास

'सागरी पताका' एक गम्भीर सांस्कृतिक उपन्यास है। इसमें राजा सगर सहित गंगावतरण की कहानी को विश्वसनीय यथार्थ का रूप देकर प्रस्तुत किया गया है। लेकिन इस कहानी का विस्तार भारत तक सीमित नहीं रहता है। मिश्र, जर्मनी, अमरीका, गायना और लिथुएनिया आदि की सांस्कृतिक-ऐतिहासिक भागीदारी 'सागरी पताका' को विश्व उपन्यास के रूप में प्रस्तुत करती है। अपनी स्थापनाओं को विश्वसनीय बनाने के लिए कथाकार राधामोहन उपाध्याय ने इतिहास-पुराण, भूगोल, काव्य, पुरातत्त्व, नृतत्त्व, भाषा विज्ञान और विविध ज्ञान-विज्ञान का सहारा लिया है। इस संयोजन में कृति सामान्य पाठकों के लिये कुछ बोझिल और क्लिष्ट हो गया है परन्तु इसके भीतर से धैर्यपूर्वक गुजर जाने वालों को आनन्द के साथ विविध जिज्ञासाओं का समाधान और नये-नये अस्पर्शित प्राचीन तथ्यों की मूल्यवान जानकारी मिलेगी, इसमें सन्देह नहीं। उपाध्याय जी ने भारत सहित विश्व-संस्कृति का गम्भीर अध्ययन कर इस मिथकीय, अतीत गाथा को उठाया है और आधुनिक सन्दर्भों में प्रस्तुत किया है।

भारतीय ज्ञान-विज्ञान और संस्कृति की पश्चिमी देशों के द्वारा जो अवज्ञा हुई है उसे देखते यह उपन्यास बहुत प्रासंगिक है। आरम्भ में यूरोप-अमरीका में हिन्दू संस्कृति का जो विस्तार दिखाया गया है वह बहुत संगत प्रतीत होता है। ऐसा नहीं लग रहा है कि लेखक खींचतान कर ऐसा सिद्ध करने का प्रयास कर रहा है।

उपन्यास के कुछ स्थल विशेष रूप से ध्यान आकर्षित करते हैं। नील नदी पर बसे मक देश (मिश्र देश) के मक नरेश की राजसभा में 'यज्ञ' विषय पर होती चित्रांकित है। यज्ञ के धार्मिक और वैज्ञानिक पक्ष के निरूपण के साथ अनात्मवादी चिन्तकों की आलोचना का सप्रमाण उत्तर भी दे दिया जाता है। राजसभा की चर्चा में भारतीय पक्ष के प्रवक्ता दीनानाथ पण्डित हैं।

इस उपन्यास में लेखक ने श्रम बहुत किया है। इसे अमृत लाल नागर के 'एकदानैमिषारण्य' और सन्हैया लाल ओझा की कृति 'सम्भवामि' की कोटि में देखा जा सकता है। इस कृति की कुछ प्रमुख विशेषताओं की ओर इंगित करने के पूर्व इसकी कुछ अतियों-अतिरेक वृत्तिक घटना को एक नज़र देख लें। राजकुमार कमलेश का हेमा के साथ जलक्रीड़ा तथा उनका रति-प्रसंग, मीना और सौरभ के बीच काम का आकर्षण और मैथ्यून के विषय में प्रस्तुत कतिपय तथ्य ऐसे हैं जो पाठकों को खटक सकते हैं। शेष कथा-यात्रा जिस ऐतिहासिक और सांस्कृति ताने-बाने में प्रस्तुत है वह बहुत ज्ञानवर्द्धक है साथ ही रोचक।

इस कृति में राजा के अष्टवसु इन्द्र, कुबेर, वरुण चन्द्र, सूर्य, यम, अग्नि और पवन की परिचय-व्याख्या बहुत तर्क संगत है। (पृ० 56) मय और नाग जाति का परिचय और राज बलि और वामन भगवान की कथा को विश्वसनीय रूप दिया गया है। (पृ० 66 और 71) अजपाजाप की व्याख्या में नूतनता है। (पृ० 87) प्रदूषण की आधुनिक समस्या उठाकर गंगावतरण के हित में प्रस्तुत करना युक्ति संगत लगता है। (पृ० 50) गाय, गायत्री और गंगा को भारतीय संस्कृति की प्रमुख पहचान के रूप में प्रस्तुत किया गया है। (पृ० 208) आयुर्वेदिक औषधियों और ज्योतिष सम्बन्धी गणना की वैज्ञानिकता-उपयोगिता पर नये सिरे से तथा आकर्षक पद्धति से प्रकाश डाला गया है। (पृ० 93-95) इसी प्रकार संस्कृतनिष्ठ परिनिष्ठित भाषा-प्रयोग के बीच-बीच में भोजपुरी शब्दों आदि को 'छौंक' स्थान-स्थान पर रोचकता बढ़ाती हैं, जैसे—'चपर-चपर' (पृ० 107) भारतीय संस्कृति और विश्व सभ्यता-संस्कृति के बीच उसकी उत्कृष्टता का रेखांकन कृति का प्रमुख आकर्षण है जो इसकी मूल्यवत्ता को बढ़ाता है। **—विवेकी राय**

वेद की कविता

प्रभुदयाल मिश्र

100.00

इस कृति में ऋग्, यजुष् और अथर्व वेदों के कुछ महत्त्वपूर्ण सूक्तों का अनुवाद प्रस्तुत किया गया है। सूक्तों का चयन बुद्धिमत्तापूर्वक किया गया है। अनुवाद छन्दोबद्ध है, निश्छन्द और मिश्र शैली में भी। साथ ही यह इतनी सरल भाषा में है कि कोई भी इसे सरलता से समझ सकता है।

पाठक-प्रतिक्रिया

'भारतीय वाङ्मय' के सितम्बर 2001 अंक में मुख पृष्ठ पर प्रकाशित 'राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता में शिक्षा' शीर्षक लेख पढ़कर जितनी सुतीप्त सहानुभूति हो रही है—उसकी शाब्दिक अभिव्यक्ति निर्वाक् का मधुर फल जैसा है। 'नहि राजापचारामन्तेण प्रजानामकालमृत्युर्भवति' वाक्य का प्रखर सत्य न तो कोई सुनने को तैयार है और न ही आप सदृश मान-भावधनी व्यक्ति सुनाने को तैयार है। संप्रति जो अंग्रेजी का शृगालरव सुनायी पड़ता है, वह मुख्यत: अपने अभिजात्य प्रमाणित करने का ब्याज है। वैदिक ज्ञान-विज्ञान, ज्योतिष का काल-विज्ञान, उपनिषदों का अध्यात्म-विज्ञान जैसे शतश: विज्ञान जर्मनी, ब्रिटेन में सर्वोच्च स्थान पर रहे हैं किन्तु ये अपनी ही जन्म एवं कर्मभूमि पर तिरस्कृत हो रहे हैं।

—डॉ० रमाकान्त त्रिपाठी
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
सतीशचन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बलिया

❑ ❑ ❑

आपके सम्पादकीय लेख 'राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता में शिक्षा' अत्यन्त ही सत्यपरक है। प्रेरणादायक एवं ज्वलंत है। **—श्री नारायण**
लखनऊ

❑ ❑ ❑

'राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता में शिक्षा' में आपके विचार मननीय है। वस्तुत: संस्कृत एवं उसमें निहित विविध शास्त्रों का अध्यापन भगवाकरण नहीं है। 'भारतीय वाङ्मय' की अन्य सूचनाएँ भी महत्त्वपूर्ण हैं। **—डॉ० रूपनारायण पाण्डेय**
प्रयाग

❑ ❑ ❑

नए प्रकाशन और सामयिक जानकारियों से परिपूर्ण 'भारतीय वाङ्मय' के सितम्बर अंक मिले। ये पत्रिका लीक से हटकर साहित्यिक समाचार के लिए महत्त्वपूर्ण है।

—ज़ियाउर रहमान जाफरी
बेगूसराय (बिहार)

त्रुटि-संशोधन

'भारतीय वाङ्मय' के गत सितम्बर के अंक के पृष्ठ तीन पर स्मृति-शेष के अन्तर्गत नेमिचंद जैन के निधन का समाचार छपा था। इस नाम के दो व्यक्ति हैं। एक हैं लब्धकीर्त्ति साहित्यकार, 'तारसप्तक' के अन्तिम जीवित साहित्यकार श्री नेमिचन्द जैन, जो अस्सी वर्ष की उम्र में स्वस्थ और सक्रिय हैं। इसी नाम के इन्दौर के जैनमुनि नेमिचन्द जैन का निधन हुआ था। समाचारपत्रों में प्रकाशित संवाद के आधार पर भ्रान्तिवश साहित्यकार नेमिचन्द जैन जी का नाम छप गया, जिसके लिए खेद है, क्षमाप्रार्थी हूँ। साहित्यकार नेमिचन्द जैन शतायु हों, प्रभु से प्रार्थना है। **—सम्पादक**

पुरस्कार-सम्मान

सावित्री गौड़ को हिन्दी भूषण सम्मान

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी साहित्य संस्थान, इलाहाबाद की ओर से **श्रीमती सावित्री गौड़ 'मंजरी'** को 'हिन्दी भूषण' सम्मान से सम्मानित किया गया है। श्रीमती गौड़ को यह सम्मान राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा साहित्य की गरिमा में निरन्तर वृद्धि करने का प्रयास करने तथा अन्य भारतीय भाषाओं के प्रति भी विशिष्ट उपलब्धियों के आधार पर विगत 16 सितम्बर को इलाहाबाद में प्रदान किया गया।

श्री देवेन्द्र सत्यार्थी

हिन्दी के वयोवृद्ध लेखक एवं लोकसाहित्य साधक **श्री देवेन्द्र सत्यार्थी** को हिन्दी अकादमी के विशिष्ट साहित्य साधक सम्मान से विभूषित किया जायगा।

विष्णु प्रभाकर व त्रिलोचन शास्त्री को 'हिन्दीरत्न' सम्मान

राष्ट्रीय हिन्दी अकादमी ने **विष्णु प्रभाकर** और **त्रिलोचन शास्त्री** सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं के विशिष्ट लेखकों और साहित्यकारों को हिन्दीरत्न सम्मान प्रदान करने का निर्णय किया है। अकादमी के अध्यक्ष स्वदेश भारती के अनुसार राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की 132वीं जयन्ती के अवसर पर शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल में 14वाँ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन 2 से 4 अक्टूबर के बीच आयोजित किया जाएगा।

उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक संस्थाएँ

ब्राह्मणों ने इस देश में साहित्य और संस्कृति तथा विचार की दुनिया में जो भी काम किया था वह आज दूसरों के पास क्या, भारत के पास भी उपलब्ध न होता, अगर पढ़े-लिखे अंग्रेज भारत में न आये होते। वेबर, विन्टरनित्ज, बुहलक, कोलब्रुक, विल्सन, कीथ, ब्लूमफील्ड, मैक्डानल, वेल्स जैसे लोगों ने ही वेदकाल से लेकर बाद की सदियों की धार्मिक और साहित्यिक कृतियों को खोजा, उनका कालनिर्धारण और ऐतिहासिक अध्ययन किया।

उत्तर प्रदेश सरकार के राज्यपाल आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री हैं। वे संस्कृत के सुधी विद्वान हैं। पर क्या इस प्रदेश में खुद भारतीय जनता पार्टी का बड़ा संस्कृतज्ञ राज्यपाल भी यह नहीं जान पाता कि संस्कृत भाषा के साथ धर्मान्ध समुदाय क्या बदसुलूकी कर रहा है? क्या विष्णुकान्त शास्त्री को भी यह भय है कि हिन्दी संस्थान जो नियोजित हिन्दी वध कर रहा है और संस्कृत संस्थान ने जो संस्कृत वध शुरू कर दिया है उसके विरुद्ध बोलने पर उन्हें भी हटाया जा सकता है? हिन्दी संस्थान, संस्कृत संस्थान, उर्दू अकादमी, ललित कला अकादमी, संगीत नाटक अकादमी आदि संस्थाएँ शिक्षा संस्कृति के बूचड़खाने बन चुकी हैं। **—मुद्राराक्षस**

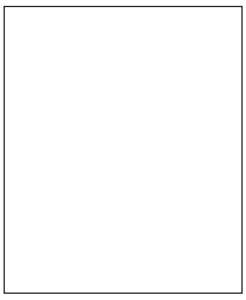

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल के महारथियों में सुप्रतिष्ठित, कोलकाता विश्वविद्यालय के पूर्व आचार्य तथा हिन्दी विभागाध्यक्ष, जोधपुर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति **डॉक्टर कल्याणमल लोढ़ा** ने 28 सितम्बर को अपने जीवन के आठ दशक पार कर 81वें वर्ष में पदार्पण किया है। इन्होंने अपनी सारस्वत साधना से जो सिद्धि प्राप्त की है, उसकी विभूति उनकी लेखनी और वाग्मिता में अलंकृत है। साहित्य-संस्कृति के चिन्तक लोढ़ाजी 'श्रीविद्या' के उपासक हैं। इन्होंने आदिशंकराचार्य की 'सौन्दर्य लहरी' और 'आनन्द लहरी' के मर्मस्पर्शी तत्वों को समझने की अथक साधना की है। इनका सार्वजनिक जीवन बहु-आयामी है। लम्बी जीवन-यात्रा के बावजूद इनकी लेखनी की प्रगतिशीलता ज्यों-की-त्यों बनी है। देश के सर्वमान्य संस्थानों एवं संस्थाओं से सम्मानित, अलंकृत, लोढ़ाजी आज भी अपनी मधुर वाग्मिता तथा सूक्ष्म एवं गम्भीर विषयों के रहस्योद्घाटन के द्वारा समाज को कुछ न कुछ देते रहते हैं। इनकी रचनाओं की संख्या दर्जनों में है, किन्तु सूक्ष्म विचारक के रूप में इनकी 'वाग्मिता', वाग्विभव, वाग्द्वार, वाक्तत्त्व और 'वाग्दोह' इनकी सारस्वत साधना की अमूल्य प्रसाद है। इस अवसर पर 'भारतीय वाङ्मय' उनके दीर्घायुष्य की शुभकामना प्रकट करता है।

लेखक, समीक्षक, पाठक, प्रकाशक

लेखक किताब को अपने किसी 'तप और त्याग' के आध्यात्मिक फल की तरह देखता है। वह मूर्ख की तरह किसी अ-प्राप्य यश के लिए लिखता जाता है और बिना वजह शहादत का भाव भरकर समाज को धिक्कारता रहता है और इतिहास में जाने के सपने देखता रहता है। पुस्तक-समाज बनाना है तो पुस्तक के लिए सब तरह का निवेश करना होगा। उसे बाजार-मित्र बनाना होगा। पिछले दिनों हिन्दी के तीन दैनिकों ने सप्ताह में पुस्तक-समीक्षा के लिए पूरा एक पृष्ठ देना शुरू किया है। हर अखबार में सप्ताह में कम से कम पाँच छह किताबों की समीक्षाएँ छपा करती हैं। पत्रिकाओं में अब भी आखिरी पृष्ठों पर समीक्षाएँ होती हैं। हम देखते हैं कि कायदे के पुस्तक-समीक्षकों की हमेशा किल्लत रहती है। हिन्दी में पुस्तक-समीक्षा लिखनेवालों को उँगलियों पर गिना जा सकता है। समीक्षकों की समीक्षा-पद्धति अभी तक लेखकोन्मुख है। **—सुधीश पचौरी**

पत्रिकाएँ

समकालीन सोच
सम्पादक : पी०एन० सिंह
सम्पर्क : गौतम बुद्ध कालोनी, मालगोदाम रोड गाजीपुर
(20.00)

उम्मीद
सम्पादक : शत्रुघ्न लाल
सम्पर्क : नाजिरपुरा, बहराइच
(25.00)

पाती
सम्पादक : अशोक द्विवेदी
सम्पर्क : टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया

उत्तर प्रदेश (मासिक)
सितम्बर 2001 से पुनर्प्रकाशन
सम्पादक : विजय राय, कुमकुम शर्मा
सम्पर्क : सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश, लखनऊ
(10.00)

काँची (त्रैमासिक)
सम्पादक : डॉ० दिनेश्वर प्रसाद
सम्पर्क : भारती, सर्वोदय नगर, कांके, राँची
(प्रति अंक 15.00)

बूधन (त्रैमासिक)
विमुक्त, घुमन्तू व अन्य जनजातियों पर केन्द्रित
सम्पादक : अनिल कुमार पाण्डेय
सम्पर्क : बी०-14 वसुन्धरा इन्क्लेव
दिल्ली-110 096
(वार्षिक 40.00)

योजना (मासिक)
सम्पादक : विजय गन्डोत्रा
सम्पर्क : जम्मू-कश्मीर राज्य सूचना विभाग
मंडी मुबारिक, जम्मू-180 001
(वार्षिक 40.00)

हिन्दी कविता में आये ठहराव से पाठक की कितनी क्षति हुई यह मैं नहीं जानता लेकिन हिन्दी कविता की क्षति हुई है यह जानता हूँ इसलिए मानता हूँ कि मुद्रित पाठ को उच्चारित पाठ में बदलने की चुनौती आज के कवि को स्वीकार करना चाहिए और न समझे जाने का खतरा उठाकर भी बड़े समुदाय तक अपनी बात को पहुँचाने की कोशिश करनी चाहिए। **—कवि केदारनाथ सिंह**

साहित्यिक चोरी

स्पेन की प्रसिद्ध उपन्यासकार ल्युसिया एक्सेबेरिया पर दूसरे लेखक की रचनाओं का चुराने का आरोप लगाया गया है। एक वर्ष से भी कम समय में यह तीसरा मौका है, जबकि किसी मशहूर लेखक पर साहित्यिक चोरी का आरोप लगा।

म०म०पं० गोपीनाथ कविराज के ग्रन्थ

मनीषी की लोकयात्रा (म.म.पं. गोपीनाथ कविराज का जीवन-दर्शन) 300
तांत्रिक वाङ्मय में शाक्त दृष्टि 100
साधुदर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 1-2) 80
साधुदर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 3) 50
तन्त्राचार्य गोपीनाथ कविराज और योग-तन्त्र-साधना *रमेशचन्द्र अवस्थी* 50
परातंत्र साधना पथ (गोपीनाथ कविराज) 40
योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्वकथा 250
श्री श्री सिद्धिमाता प्रसंग 20
(कायाभेदी ब्रह्मवाणी तथा विवरण सहित)
भारतीय धर्म साधना *म.म.पं. गोपीनाथ कविराज* 80
तन्त्र और आगम शास्त्रों का दिग्दर्शन 15
ज्ञानगंज *म.म.पं. गोपीनाथ कविराज* 60
कविराज प्रतिभा *म.म.पं. गोपीनाथ कविराज* 64
दीक्षा *म.म.पं. गोपीनाथ कविराज* 60
श्री साधना *म.म.पं. गोपीनाथ कविराज* 50
स्वसंवेदन 50
प्रज्ञान तथा क्रमपथ *म.म.पं. गोपीनाथ कविराज* 80
तांत्रिक साधना और सिद्धान्त 120
श्रीकृष्ण प्रसंग *म.म.पं. गोपीनाथ कविराज* 250
काशी की सारस्वत साधना 35
शक्ति का जागरण और कुण्डलिनी 100
भारतीय संस्कृति और साधना (भाग-1) 200
भारतीय संस्कृति और साधना (भाग-2) 120
सनातन-साधना की गुप्तधारा 100
अखण्ड महायोग *म.म.पं. गोपीनाथ कविराज* 50
क्रम साधना *म.म.पं. गोपीनाथ कविराज* 60
भारतीय साधना की धारा 30
परमार्थ प्रसंग (प्रथम खण्ड) 150
अखण्ड महायोग का पथ और मृत्यु विज्ञान 20

पं० गोपीनाथ कविराज समकालीन संत-महात्मा

सूर्य विज्ञान प्रणेता योगिराजाधिराज स्वामी विशुद्धानन्द परमहंसदेव : जीवन और दर्शन *नंदलाल गुप्त* 160
English Edition *In Press*
श्री श्री सिद्धिमाता प्रसंग (कामभेदी ब्रह्मवाणी तथा विवरण सहित) *म.म.पं. गोपीनाथ कविराज* 250
पुराणपुरुष योगिराज श्री श्यामाचरण लाहिड़ी *सत्यचरण लाहिड़ी* 120
नीम करौरी के बाबा *डॉ. बदरीनाथ कपूर* 12
शिवस्वरूप बाबा हैड़ाखान *सद्गुरुप्रसाद श्रीवास्तव* 150
सोमबारी महाराज (उत्तराखण्ड की अनन्य विभूति) *हरिश्चन्द्र मिश्र* 50
Purana Purusha Yogiraj Sri Shhyama Charan Lahiree *Dr. Ashok Kr. Chatterjee* 400

संस्कृत, व्याकरण, भाषा तथा साहित्य

प्रारम्भिक रचनानुवाद कौमुदी *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 12
रचनानुवाद कौमुदी *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 45
प्रौढ़ रचनानुवाद कौमुदी *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 80
संस्कृत-निबन्ध-शतकम् *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 80
संस्कृत-व्याकरण एवं लघुसिद्धान्त कौमुदी (सम्पूर्ण) सजिल्द 200, अजिल्द 140
डॉ० कपिलदेव द्विवेदी
भाषा-विज्ञान एवं भाषा-शास्त्र सजिल्द 200, अजिल्द 100
डॉ० कपिलदेव द्विवेदी
अर्थविज्ञान एवं व्याकरण दर्शन *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 400
वैदिक साहित्य एवं संस्कृति सजिल्द 250, अजिल्द 125
डॉ० कपिलदेव द्विवेदी
लघुसिद्धान्तकौमुदी *डॉ० रामअवध पाण्डेय व डॉ० रविनाथ मिश्र* 40
बालसिद्धान्तकौमुदी *ज्योतिस्वरूप मिश्र* 50
सिद्धान्त-कौमुदी (कारक प्रकरणम्) *ज्योतिस्वरूप मिश्र, उर्मिला मोदी* 20
चन्द्रालोक-सुधा एवं छन्दोमञ्जरी-सुधा *विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी* 20
अभिनव का रस-विवेचन *नगीनदास पारेख तथा डॉ० प्रेमस्वरूप गुप्त* 100
वक्रोक्तिजीवितम् *डॉ० दशरथ द्विवेदी* 80
ध्वन्यालोक (दीपशिखा टीका सहित) *डॉ० चन्द्रिकाप्रसाद शुक्ल* 50
मृच्छकटिक : शास्त्रीय, सामाजिक एवं राजनीतिक अध्ययन *डॉ० शालग्राम द्विवेदी* 100
संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास सजिल्द 350, अजिल्द 200
डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी
संस्कृत साहित्य की कहानी *उर्मिला मोदी* 50
भारतीय दर्शन का सुगम परिचय *डॉ० शिवशंकर गुप्त* 80
संस्कृत का भाषाशास्त्रीय अध्ययन *डॉ० भोलाशंकर व्यास* 100
शिवराम त्रिपाठी कृत लक्ष्मीनिवास कोश (उणादि कोश) *डॉ० रामअवध पाण्डेय* 40
वेद व विज्ञान *स्वामी प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती* 180
वेदचयनम् *विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी* 50
ऋग्वेदभाष्यभूमिका *डॉ० हरिदत्त शास्त्री* 25
पालि-प्राकृत-अपभ्रंश-संग्रह *डॉ० रामअवध पाण्डेय तथा डॉ० रविनाथ मिश्र* 70
भुशुण्डि रामायण (3 खण्ड) *डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह तथा पं० रामाधार शुक्ल* 475
शांकरवेदान्ते तत्व-मीमांसा *डॉ० के०पी० सिन्हा* 40
भारतीय दर्शन तथा आधुनिक विज्ञान *सद्युम्न आचार्य* 150
शृङ्गारमञ्जरी सट्टकम् (श्रीमद्विश्वेश्वर) *सं० बाबूलाल शुक्ल* 20
मुद्राराक्षसम् *सं० डॉ० रमाशंकर त्रिपाठी* 100
मेघदूतम् (कालिदास) *डॉ० रमाशंकर त्रिपाठी* 50
दशरूपकम् *डॉ० रमाशंकर त्रिपाठी* 150
अभिज्ञानशाकुन्तलम् *सं० डॉ० शिवशंकर गुप्त* 80

अन्य आध्यात्मिक तथा धार्मिक ग्रन्थ

गुप्त भारत की खोज *पाल ब्रंटन* 200
रामायण का काव्य मर्म *विद्यानिवास मिश्र* 225
सब कुछ और कुछ नहीं *मेहेर बाबा* 60
जपसूत्रम (प्रथम तथा द्वितीय खण्ड) *स्वामी श्री प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती* (प्रत्येक) 150
रावण की सत्यकथा *नगीना सिंह* 60
प्राणमयं जगत *अशोककुमार चट्टोपाध्याय* 22
श्यामाचरण क्रियायोग व अद्वैतवाद *अशोककुमार चट्टोपाध्याय* 100
अनन्त की ओर (एक साधक की आध्यात्मिक अनुभूतियाँ) *अशोककुमार* 90
भारत के महान साधकों की खोज *दशरथनारायण शुक्ल* 40

चिंतक, संत, योगी, महात्मा

उत्तराखण्ड की सन्त परम्परा *डॉ० गिरिराज शाह* 00
सन्त रैदास *श्रीमती पद्मावती झुनझुनवाला* 60
योग एवं एक गृहस्थ योगी : योगिराज सत्यचरण लाहिड़ी (पौत्र : महायोगी लाहिड़ी महाशय) *शिवनारायण लाल* 150
योगिराज तैलंग स्वामी *विश्वनाथ मुखर्जी* 40
ब्रह्मर्षि देवराहा-दर्शन *डॉ० अर्जुन तिवारी* 200
भारत के महान योगी (10 भाग, 5 जिल्द) *विश्वनाथ मुखर्जी* (प्रत्येक) 100
महाराष्ट्र के संत-महात्मा *ना०वि० सप्रे* 120
आदि शंकराचार्य *डॉ० जयराम मिश्र* 80
एकता के दूत शंकराचार्य *डॉ० दशरथ ओझा* 125
शङ्कराचार्य *प्रो० राममूर्ति शर्मा* 200
गुरुनानक देव : जीवन और दर्शन *डॉ० जयराम मिश्र* 125
स्वामी रामतीर्थ : जीवन और दर्शन '' 200
संत ज्ञानेश्वर जीवन और कार्य *चंद्रकांत बांदिबडेकर* 200
स्वामी सहजानन्द सरस्वती-मेरा जीवन संघर्ष 200
चैतन्य महाप्रभु *अमृतलाल नागर* 90
करुणामूर्ति बुद्ध *गुणवंत शाह* 25
महामानव महावीर *गुणवंत शाह* 30
शिरडी साईं बाबा : दिव्य महिमा *डॉ० गणपति चन्द्रगुप्त* 60
श्री सत्य साईं बाबा : दिव्य महिमा '' 65
पैगम्बर हजरत मुहम्मद *डॉ० इकबाद अहमद* 75
स्वामी राम : जीवन और दर्शन *र०श० केलकर* 120
राजा राममोहनराय *के०सी० दत्त* 150
मानव पुत्र ईसा : जीवन और दर्शन *डॉ० रघुवंश* 160
है प्रेम जगत में सार *इन्दरचन्द तिवारी* 100

धर्म, दर्शन, इतिहास तथा शास्त्र ग्रन्थ

श्री गुरुग्रन्थ साहिब गुरुवाणी (मूल पाठ नागरी लिपि, हिन्दी अनुवाद) 4 साँची (भाग) 700
श्री दशम ग्रन्थ (नागरी लिपि हिन्दी अनुवाद) 4 साँची (भाग) 480

कुर्आन शरीफ (अरबी-नागरी लिपि) हिन्दी अनुवाद 150
होली बाइबिल (ओल्ड तथा न्यू टेस्टामेंट) 300
मनुस्मृति *रामचन्द्र वर्मा शास्त्री* 400
आत्मा, कर्म, पुनर्जन्म और मोक्ष *डॉ० मधुरिमा सिंह* 160
हिन्दुओं के व्रत, पर्व और त्योहार *रामप्रताप त्रिपाठी* 100
भारतीय दर्शन (दो खण्ड) *डॉ० राधाकृष्णन्* 600
सत्य की खोज *डॉ० राधाकृष्णन्* 125
हिन्दू धर्म : जीवन में सनातन की खोज *विद्यानिवास मिश्र* 225
हिन्दू सभ्यताा *राधाकुमुद मुकर्जी* 275
प्राचीन भारत *राजबली पाण्डेय* 300
प्राचीन भारत की संस्कृति और सभ्यता *डॉ० धर्मानन्द कौसांबी* 250
संस्कृति के चार अध्याय *रामधारी सिंह दिनकर* 300
बौद्ध धर्म और दर्शन *आचार्य नरेन्द्रदेव* 495
शंकराचार्य : विचार और सन्दर्भ *गोविन्दचन्द्र पाण्डेय* 90
भारतीय संस्कृति के आधार *अरविन्द* 80
बौद्ध दर्शन तथा अन्य भारतीय दर्शन (भाग 1-2) *भरत सिंह उपाध्याय* 700
आचार्य वल्लभ और उनका दर्शन *राजलक्ष्मी वर्मा* 200
भारतीय संस्कृति *पृथ्वीकुमार अग्रवाल* 250
हिन्दुत्व (हिन्दू धर्म कोश) *रामदास गौड़* 250
हिन्दू संस्कार *डॉ० राजबली पाण्डेय* 150
धर्मशास्त्र का इतिहास (5 भाग) *पी०वी० काणे* 800
हिन्दुत्व *नरेन्द्र मोहन* 300
हिन्दू दर्शन : एक समकालीन दृष्टि *डॉ० कर्ण सिंह* 120

पौराणिक तथा वैदिक आख्यानों पर उपन्यास

महासमर (महाभारत) *नरेन्द्र कोहली*
1. बंधन-250, 2. अधिकार-225, 3. कर्म-225, 4. धर्म-225, 5. अंतराल-225, 6. प्रच्छन्न-350, 7. प्रत्यक्ष-300, 8. निर्बंध-300।

मृत्युंजय (कर्ण) *शिवाजी सावंत* 280
द्रौपदी (महाभारत) *प्रतिभा राय* 150
पार्थ (अर्जुन) *युगेश्वर* 225
ययाति *वि०स० खांडेकर* 175

मुद्रिका रहस्य

शरद जोशी

मूल्य : 60.00

स्व० जोशी का नाम हिन्दी के उन गिने-चुने लेखकों की परम्परा में आता है जिन्होंने अपने लेखन में समाज की विडम्बनाओं, विसंगतियों, विरोधाभासों और कुरूपताओं को जी भर कर कोसा। मंत्री, संतरी, अफसर, प्रोफेसर, नेता, अभिनेता, लेखक, पत्रकार से लेकर राम-रावण, कृष्ण-सुदामा, दुष्यंत-शकुंतला और गाँधी तक उनकी पैनी निगाहों से बच नहीं पाये। कला-संस्कृति की छद्मताओं और राजनीति के टुच्चेपन पर उन्होंने जिस तीखेपन और चतुराई से कलम चलायी है—वह उन्हें अपने समकालीन व्यंग्यकारों से बिल्कुल ही अलग कर देती है।

और शायद यही कारण रहा कि मंत्री से लेकर दफ्तरी तक—सभी वर्गों के लोग उनकी रचनाओं के समान रूप से प्रशंसक रहे हैं।

शरद जोशी के सम्पूर्ण साहित्य से चुनी उनकी उन्तीस व्यंग्य रचनाओं का संकलन '**मुद्रिका रहस्य**' निश्चित ही उनके उन पाठकों को आश्वस्त नहीं करेगा, जो उनके जीवन के अन्तिम दशक में सम-सामयिक विषयों पर लिखी गयी उनकी लघु रचनाओं के प्रशंसक रहे होंगे।

संकलन के प्रस्तावना आलेख में श्रीलाल शुक्ल ने लिखा है कि ये रचनाएँ लेखक की प्रतिनिधि तथा वाचिक परम्परा की श्रेष्ठ रचनाएँ हैं, परन्तु पूरा संकलन पढ़ जाने के बाद भी ऐसी कोई छवि पाठक के मन में नहीं बन पाती है।

दूध पीने की कला, बिजनेस, बीच सड़क में, खाली जगह की पूर्ति—इस संकलन की कुछ ऐसी रचनाएँ हैं, जो हमारा साक्षात्कार समाज में चारों ओर फैले अवसाद से कराती हैं। इन रचनाओं का सच हमारे-अपने आस-पास का सच है। भाषा, शिल्प और दृष्टि के जिस पैनेपन के कारण शरद जोशी ने अपनी बिल्कुल अलग पहचान बनायी है, उनकी यह पहचान हमें 'अतृप्त आत्माओं की रेलयात्रा' तथा 'कथा सत्यनारायण की' रचनाओं में देखने को मिलती है। संकलन की शीर्षक रचना 'मुद्रिका रहस्य' के बहाने लेखक ने समाज में प्रदूषण फैला रहे घटिया फुटपाथी साहित्य पर अपनी चिंता दर्ज करायी है। **—कौशल पाण्डेय**

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 2 **अक्टूबर 2001** **अंक : 10**

प्रधान सम्पादक
पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्पादक
परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क
रु० 30.00

विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी
के लिए
अनुरागकुमार मोदी
द्वारा प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी
द्वारा मुद्रित

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत **रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2001**

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन
प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)
विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN
Premier Publisher & Bookseller
(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)
Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

✆ : (0542) 353741, 353082 ● Fax : (0542) 353082 ● E-mail : vvp@vsnl.com ● vvp@ndb.vsnl.net.in